अध्ययन सामग्री ! -
विषय - हिन्दी
वर्ग - स्नातक II
प्रश्नपत्र - अनिवार्य पेपर (हिन्दी रचना)

सुमन कुमारी
सहायक प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा

'उत्तर सीता चरित'
मुख्य पंक्तियों की व्याख्या

Scanned with CamScanner

" नारी की एकमात्र गति पति
यह विधि का लेख ललाटों पर
पानी पीता है किन्तु पुरुष
स्वच्छंद अनेक घाटों पर ।"

प्रस्तुत पंक्तियाँ सुप्रसिद्ध साहित्यकार कनकधर सिंह ~~कमल~~ केसरी द्वारा रचित है जो खण्ड काव्य 'उत्तर सीता चरित' ~~से उद्धृ~~ के चतुर्थ सर्ग से उद्धृत है। इस काव्य में निर्वासित सीता का जीवन बहुत ही मार्मिकता के साथ उकेरा गया है।

प्रस्तुत पंक्तियों में विरजा पुरुष और नारी के बीच जो सामाजिक अंतर बनाये गये हैं, ~~जो~~ उन दो 'तरफा नियम ~~बनाए गये हैं~~ ~~उनके~~ प्रति करारा प्रहार करती है। हमारे समाज में नारी के ~~एक~~ लिए एक मात्र पति ही उसका गति होता है अर्थात् उसका सबकुछ वही होता है। पति के अतिरिक्त और कुछ भी सोचना मना है। सुख-दुःख, साज-सिंगार आदि बातें सिर्फ पति से जुड़ा हो, किन्तु दूसरी तरफ पति के लिए हर तरह की स्वतंत्रता, ~~उन्मु~~ स्वच्छन्दता की भरपूर छूट है। यह तो अनेक घाटों पर पानी पीता है। तात्पर्य यह है कि नारी के लिए ~~परत~~ परतंत्र जीवन अनिवार्य है, और पुरुष के लिए स्वतंत्र। पुरुष कई नारियों का साहचर्य ~~व~~ और स्नेह प्राप्त कर सकता है और वही पुरुष नारी के लिए नियम-कानून बना डालें हैं। ~~यहा~~

यहाँ विरजा के माध्यम से कवि ने पुरुष-प्रधान समाज पर बहुत ही कौशलपूर्ण ढंग से तीखा प्रहार किया है। इस ~~में~~ संदर्भ में विरजा की ~~क्रांति भावना~~ व क्रांतिकारी भावना परिलक्षित होती है और उसका ये

विरोध आधुनिक नारी जागरण बोध से युक्त है। विरजा का यह क्रांतिकारी विरोध स्वयं कवि का अपना विरोध है। वे स्त्रीपक्ष में आवाज उठाते हैं उनके अधिकारों के प्रति उन्हें सजग व जागरूक करते हैं।

पद में कवि की भाषा सहज, सौम्य व प्रभावशाली है।

Scanned with CamScanner